आरएनआई पंजीयन RAJHIN/2016/72902

डाक पंजीयन RJ/ UD/ 29-150/ 2020-2022

शब्द रंजन

संस्थापक एवं संरक्षक डॉ. महेन्द्र भानावत

विचार एवं जन संवाद का पाक्षिक

वर्ष 4 | अंक 24 | उदयपुर बुधवार 01 जनवरी 2020 | पेज 8 | मूल्य 5 रू.

जले हुए को जिलाने वाली बीकानेरी मलहम

-डॉ. कविता मेहता-

आधुनिक चिकित्सा के प्रचलन से पूर्व भारत में देशी इलाज से बीमारियों का उपचार सदियों से होता आ रहा है। देशी इलाज में झाड़-फूंक, तन्त्र-मन्त्र, घरेलू दवाइयां और देशी नुस्खे से बनी दवाइयां तो आती ही हैं, इसके अलावा खासतौर से बनाई गई दवा भी बीमार व्यक्तियों को राहत देती है।

बरसों से जले हुए लोगों का नि:शुल्क इलाज करते आ रहे बीकानेर में बड़ा बाजार के आगे स्थित सदर बाजार के अग्रवाल बन्धु भी उन सैकड़ों देशी इलाज करने वालों की जमात में शामिल हैं जो बिना किसी दवा-दारू के गम्भीर से गम्भीर जले हुए व्यक्ति को भी चन्द दिनों में ही भला-चंगा कर देते हैं। देखने वालों को यह लगता ही नहीं कि वह व्यक्ति कभी जला था।

अग्रवाल बन्धुओं में बुलाकीदास अग्रवाल ने एक मलहम इजाद किया जिससे गम्भीर से गम्भीर जला हुआ मरीज भी उसके लेप से कुछ दिनों में बिल्कुल ठीक हो जाता है। न चीर-फाड़ की जरूरत और न ही इंजेक्शन या ग्लूकोज की जरूरत। न कभी इलाज में किसी गोली-कैप्सूल की जरूरत। बस एक सफेद मलहम है जो जले में रामबाण की तरह काम करता है। यहां तक कि यह मलहम जले का निशान भी नहीं रहने देता। यह मलहम निशान को ऐसे साफ करता है जैसे कोई तेज डिटरजेंट साबुन कपड़े से मैल निकाल बाहर कर देता है। गम्भीर जला हुआ पुरुष या महिला जब बिल्कुल ठीक होकर आते हैं तो स्वयं इलाज करने वाले अग्रवाल बन्धु भी उन्हें पहचान नहीं पाते।

सदर बाजार में खानदानी रूप से सूखे साग की दुकान करने वाले अग्रवाल बन्धु इसी दुकान या दुकान के बाहर जले हुए लोगों का नि:शुल्क इलाज करते हैं। पूरे शहर में जलने का कोई हादसा हो जाए तुरन्त ही अग्रवाल की दुकान याद आती है। लोग भागे चले आते हैं। बच्चे, जवान, बूढ़े, पुरुष तथा महिलाएं की यहां सुबह से शाम तक इलाज के लिए भीड़ लगती है। अग्रवाल परिवार के कई लोग इलाज के लिए आये लोगों के जख्मों पर सफेद मलहम लगाते हैं। अपने ही हाथों से बनाया गया यह विशेष किस्म का मलहम गोली की तरह असर करता है। कैसा ही जला हुआ व्यक्ति हो, चन्द दिनों में ठीक हो जाता है।

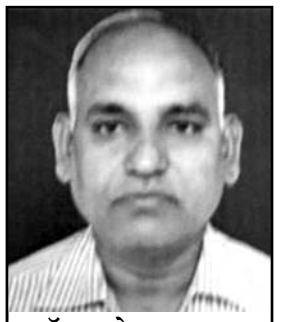

डॉ. रामदेव अग्रवाल

बुलाकीदास के भाई रामदेव अग्रवाल ने बताया कि सन् 1965 में एक महात्मा बाकानेर आए। उन्होंने एक खास किस्म का मलहम बनाने का फार्मूला दिया। यह फार्मूला हमारे एक रिश्तेदार को मिला। उसी फामुर्ले के आधार पर मलहम बनाकर जले हुए लोगों का इलाज करने लगे। बुलाकीदास अग्रवाल के रिश्तेदारों ने मलहम बेचना शुरू कर दिया। यह बात उस महात्मा को अखरी। बुलाकीदास भी स्वयं मलहम खरीदते और नि:शुल्क ही लोगों का इलाज करते। इस सेवाभाव से प्रसन्न होकर उक्त महात्मा ने बुलाकीदास अग्रवाल को भी मलहम बनाने का फार्मूला बताया। उसके बाद वे खुद ही मलहम बनाने लगे और लोगों का नि:शुल्क इलाज करने लगे।

उसके आधार पर छह-सात तरह की वस्तुएं मिलाकर, एक विशेष मंत्र का जाप कर यह मलहम तैयार किया जाता है। मलहम पूरी तरह आयुर्वेद की अवधारणा पर आधारित है। ईष्ट देवता महादेव की कृपा से ही मलहम बनाकर लोगों का इलाज करते आ रहे हैं। मलहम का नाम भी महादेव के नाम पर 'शिव भक्ति मलहम' ही रखा है। अग्रवाल ने बताया कि पहले तो बहुत ही कम मलहम उठता था लेकिन अब रोजाना ढाई से तीन किलो मलहम लग जाता है। मरीजों की संख्या बढ़ती जा रही है। आज के युग में जलने के किस्से भी कुछ ज्यादा ही हो रहे हैं। महिलाओं को विशेषत: जलने या जलाने की वारदात अधिक होने लगी है।

रामदेव ने इलाज के बारे में खुलासा करते हुए बताया कि जले हुए व्यक्ति के सबसे पहले रूई से फफोले फोड़ते हैं और घावों को साफ करके मलहम की पट्टियां (गाज) लगाते हैं। फिर ऊपर से पट्टी बान्ध देते हैं। इलाज में ना कोई चीर-फाड़ होता है और न ही कोई दवा-दारू की जरूरत है। मरीज को एक दिन छोड़कर दूसरे दिन पट्टी के लिए बुलाया जाता है। ज्यादा जले हुए व्यक्ति का 10-15 पट्टियों में और साधारण जले हुए का तीन-चार पट्टियों में इलाज हो जाता है। कोई उपकरण काम में नहीं लेते। पट्टी लगने से मरीज को तुरन्त राहत मिलती है। ठण्डक पहुंचती है। यह मलहम घावों पर चिपकता भी नहीं है। जले हुए स्थान पर जलन बन्द हो जाती है। गर्म तेल, तेजाब, चासनी, गर्म दूध, गर्म पानी, गैस, साइलेंसर, पटाखे या किसी भी चीज से जले हुए का यहां इलाज होता है। कई बार मरीजों को डाक्टर भी जवाब दे देते हैं।

ऐसे मरीजों को भी अग्रवाल की शरण में एक नया जीवनदान मिल जाता है। यहां कई उदाहरण मिलते हैं जिनमें मरीजों से डाक्टरों ने पल्ला झाड़ लिया लेकिन अग्रवाल बन्धुओं ने उन्हें नया जीवन दिया। अस्पताल में भर्ती होकर कई दिन इलाज कराने के बाद भी वहां से भागकर जले हुए मरीज यहां इलाज के लिए आते हैं। अग्रवाल के अनुसार ऐसे मरीज जल्दी ही ठीक हो जाते हैं क्योंकि उन्हें काफी कुछ इलाज तो अस्पताल से मिल जाता है। हमारा विशेष मलहम मवाद को बाहर कर देता है। अन्त में जले हुए का निशान भी मिटा देता है।

सुबह दस से एक तथा शाम को पांच से सात बजे तक दुकान पर ही इलाज किया जाता है। आपात स्थिति में 24 घण्टे तैयार रहते हैं। 23 दिसम्बर 1996 को हरियाणा के डबवाली भीषण अग्निकांड में अग्रवाल बन्धु अपने दल बल के साथ डबवाली पहुंचे। बीकानेर जिलाधीश सुबोध अग्रवाल की विशेष पहल पर डॉ. रामदेव अग्रवाल अपने दस सदस्यों के साथ 18 दिन तक वहां रहे और सौ रोगियों का वहां की राजाराम अग्रवाल धर्मशाला में इलाज किया। उनकी लोकप्रियता से अन्य रोगी भी ठीक हुए और उनकी विशेष मांग पर जिलाधीश अग्रवाल ने पन्द्रह दिन के लिए पुन: इस दल को वहां भेजा।

यह देशी मलहम दाद, खाज, फोड़े, फुंसी, पाइल्स, फीशर और किसी भी तरह के चर्म रोग में भी अचूक दवा है। अस्पतालों में जहां जले हुए व्यक्ति के इलाल में 25 से 50 हजार तक का खर्च बैठता है वहीं अग्रवाल के यहां मात्र 25 से 50 रूपये तक का ही खर्चा आता है। यह खर्चा भी मलहम का नहीं बल्कि पट्टी के लिए होता है। मरीज को पट्टी स्वयं खरीदनी पड़ती है। बाकी मलहम नि:शुल्क लगाया जाता है।

रामदेव अग्रवाल ने बताया कि जले हुए व्यक्ति का इलाज करने में कई बार कानूनी अड़चनें भी सामने आ जाती हैं। बचने के लिए अत्यन्त गम्भीर रूप से किसी हादसे में जले हुए व्यक्ति का इलाज पुलिस व अस्पताल की औपचारिकता पूरी करने के बाद ही करते हैं।

अग्रवाल बन्धुओं को अपने इस फन में माहिर होने पर वक्त-बे-वक्त जिला प्रशासन और अन्य संस्थाओं ने पुरस्कृत भी किया है। डॉ. रामदेव अग्रवाल का कहना है कि हमें पुरस्कार नहीं बल्कि सरकार के सहयोग की जरूरत है। सरकार सहयोग दे और आमजन गम्भीर होकर हमें मदद करते तो हम बीकानेर में जले हुए लोगों के उपचार के लिए एक विशेष तरह का अस्पताल प्रारम्भ कर सकते हैं।

अग्रवाल बन्धुओं में सबसे बुजुर्ग 60 वर्षीय बुलाकीदास अग्रवाल ने एक मलहम इजाद किया हुआ है। गम्भीर से गम्भीर जला हुआ मरीज भी उस मलहम के लेप से कुछ दिनों में बिल्कुल ठीक हो जाता है। न चीर-फाड़ की जरूरत और न ही इंजेक्शन या ग्लूकोज की जरूरत। न कभी इलाज में किसी गोली-कैप्सूल की जरूरत। बस एक सफेद मलहम है जो जले पर रामबाण की तरह काम करता है। यहां तक कि यह मलहम जले का निशान भी नहीं रहने देता। यह मलहम निशान को ऐसे साफ करता है जैसे कोई तेज डिटरजेंट साबुन कपड़े से मैल निकाल बाहर कर देता है। गम्भीर जला हुआ पुरुष या महिला जब बिल्कुल ठीक होकर आते हैं तो स्वयं इलाज करने वाले अग्रवाल बन्धु भी उन्हें पहचान नहीं पाते।

हमारे पास शब्द रंजन है आपके पास और भी बहुत कुछ कृपया सहयोग करें

संरक्षक	11000/
विशिष्ट सदस्य	5000/
आजीवन सदस्य	3000/
शब्दरंजन के सहयात्री	1000/
साहित्यिक चौपाल	500/
वार्षिक संस्थागत	300/
वार्षिक व्यक्तिगत	250/

शब्दरंजन में विज्ञापन सहयोग कर अपने इस पत्र को और अधिक रंगदार, रूपवान तथा समाज विकास का अग्रणी प्रतिनिधि पत्र बनायें।

(**Shabd Ranjan**, UCO BANK, Bhupalpura Branch, Udaipur, a/c no. 18450210000908, IFSC no. UCBA0001845, a/c type- Current a/c)

कृपया रचनाएं व समाचार ई-मेल से भेजें तो सुविधाजनक शीघ्र प्राप्त होंगी।

shabdranjanudr@gmail.com

खोज-खबर

वह 'हरबोलों' की रानी वाली कविता

वह कवि ही होता है जो अरहर का आकाश बना किसी को अमरता प्रदान कर देता है। झांसी वाली रानी की अमरता के पीछे वह कविता है जो सुभद्राकुमारी चौहान द्वारा लिखी गई। इस कविता का प्रभाव यह रहा कि रानी लक्ष्मीबाई तो जबर्दस्त ख्यात हुई ही, कवयित्री सुभद्राकुमारी भी जबरी चर्चित हुई। दोनों का सुनाम, सुयश और सुधर्म दिग्दिगन्त हुआ।

छठी कक्षा में पहली बार वह कविता पढ़ी थी। उस कविता के साथ ही पहली बार मुझ से जोशीला स्वर निकला था। मुट्ठी तनी थी। भुजा फड़की थी। आंखों में तेजी आई थी। दुश्मन को कुचलने वाले पांव ने पटकी मारी थी। होल्डर की नीब ने तलवार की धार बन कागज को भेद दिया था। उस कविता की कई पंक्तियां तो आज भी याद हैं पर 'बुन्देलों हरबोलों के मुख हमने सुनी कहानी थीं' पंक्ति वाला शब्द 'हरबोलों' अब जाकर मेरी समझ में आया।

इसमें गुरुजी क्या करते! उन्होंने हरबोलों को नहीं समझाया तो हम समझने वाले कौन थे जो पूछते कि हरबोलों का क्या अर्थ होता है? तब गुरुजी से सवाल करना आफत मोल लेना भी था। बाद में बड़ी कक्षा में भी वही कविता पढ़ाई गई-

'खूब लड़ी मर्दानी वह तो झांसी वाली रानी थी।'

इस कविता के साथ घोड़े पर बैठी रानी का चित्र भी था। सर पर उछाल खाता घोड़ा और उस पर बैठी रानी के हाथ में तेजी लिए चमचमाती तलवार देख लड़ाई का दृश्य सामने आ जाता। माथे पर जैसे गूंज देता हवाबाज घोड़ा निकल जाता वैसे ही जो युद्ध कभी देखा नहीं गया उसका नक्शा आंखों के सामने कठपुतलियों की तरह उतर आता।

बुन्देलखण्ड की ओर इन हरबोलों का स्थायी निवास रहा। फिरंगियों से टक्कर लेने वाले गीत और गाथाओं को बड़ी बहादुरी एवं ओज के साथ गाकर लोगों को अपने देशीपन की चेतना देने का जबर्दस्त माहौल बनाने वाले हरबोले धीरे-धीरे चुपके-चुपके कई प्रान्तों में फैल गए।

किसी की पकड़ में न आ पायें और न ये पहचाने जावें इसलिए सूर्योदय के पहले-पहले ये अपना काम पूरा कर लेते और भेंट आदि लेकर आगे की राह पकड़ते। उस गुलामी के दौर में हरबोलों का साहस और दृढ़मन कैसा अडिग, निडर और निर्भय रहा कि अंग्रेज परस्त राजा का कोई दबदबा स्वीकार नहीं किया। कहीं पेड़ पर चढ़कर गाथा-गीत की टेर उगेरी तो कहीं चादर तानकर लम्बी तान छेड़ी। कहीं पांवों में घुघरू बान्ध छनछनी दी तो कहीं सिर पर मोर मुकुट लगा जय वासुदेवा की राग अलापी।

राजस्थान में बून्दी, कोटा की ओर इनका आना-जाना रहा पर मेवाड़ में भी कभी आये जरूर होंगे। कारण कि बहुत बचपन में हरबोला तो नहीं पर हड़बोला नाम जरूर सुना और उनकी पहली टेर पंक्ति- 'बारा बरस पीते जजमान अब तो करो दाच्छिना दान हर बंगे.....' कभी सुनी होगी जो अब भी मुझे सुकून देती है।

सुभद्राजी ने अवश्य ही हरबोलों से रानी लक्ष्मीबाई की गाथा सुनी होगी। सुनी ही क्यों, उतनी ही गुनी होगी। उसी लय-छन्द-गायकी में उन्होंने अपने रंग में यह कविता लिखकर अपार प्रसिद्धि का वरण किया। लोक प्रचलित छन्द में काव्य-रचना कर कई कवियों ने लोकप्रियता प्राप्त की। सर्वाधिक तो मैथिलीशरण गुप्त ही चर्चित होकर राष्ट्रकवि कहलाये। ऐसे कवियों की काव्यधर्मिता का लोकदृष्टि से विश्लेषण करने की तो किसी ने चेष्टा ही नहीं की।

सवा सौ स्वर्ण पदकों वाले जादूगर नारायणदास

मेवाड़ की नाथद्वारा नगरी श्रीनाथजी की लीलाओं की आलौकिक नगरी है। यहां की चित्रकारी और मीनाकारी तो जग जाहिर है ही पर एक से बढ़कर एक धुरंधर हवेली संगीतज्ञों और कुश्तीबाजों का भी कम कमाल नहीं रहा। पखावज वादन में पुरुषोत्तमदास यहीं के सिद्ध साधक रहे जिन्होंने संगीत जगत में अपना अनूठा अंतरिक्ष बांधा।

ऐसे ही प्रो. नारायणदास जनता जनार्दन में बड़े लोकप्रिय हुए जिन्होंने अपने जादुई करतबों से पचास बरस से अधिक समय तक खूब वाहवाही ली और जितना जो कुछ कमाया, सारा का सारा समाज हितकारिणी प्रवृत्तियों में खर्च कर दिया।

उनके सम्बन्ध में सर्वाधिक महत्वपूर्ण बात यह है कि बड़ी-बड़ी संस्थाओं, संगठनों, राजा-महाराजाओं के वहां उन्होंने अपने जादू का इतना जबर्दस्त प्रभाव छोड़ा कि उन्हें सवा सौ स्वर्ण पदक सम्मानार्थ प्राप्त हुए परन्तु एक समय ऐसा आया जब सामाजिक कार्यों के लिए उन्होंने धन का अभाव पाया तो सारे ही स्वर्ण पदक बेच दिये। नाथद्वारा में मेरी उनसे यादगार भेंट रही।

प्रो. नारायणदास को भारत की प्राचीन विद्याओं के प्रति अटूट निष्ठा एवं गहरा लगाव रहा। मद्रास में करीब सात वर्ष रहकर उन्होंने स्वामी आत्मानन्द से रमल शास्त्र का परिज्ञान लिया और जर्मनी के प्रख्यात जादूगर चेंगलीन से जादू सीखा। इस कला में प्रो. एल. के. शाह ने भी बड़ा योग दिया। यही नहीं, प्रो. श्यामजी भाई से शब्दवेध, अदृश्यवेध तथा मत्स्यवेध की कला सीखी और इनमें प्रवीण हो मदुरा, त्रिचनापल्ली, कोचीन, कालीकट, मैसूर, बैंगलोर, हैदराबाद आदि कई स्थानों पर लगातार दस वर्षों तक इन कलाओं का प्रदर्शन देकर अपना विशिष्ट प्रभाव छोड़ा और अटूट मान-सम्मान पाया।

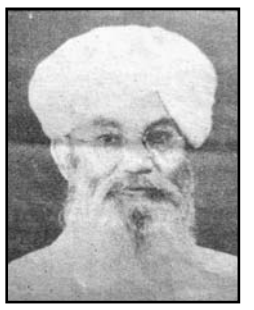

प्रथम विश्वयुद्ध के समय सैनिकों के सम्मानार्थ मैसूर बैंक की ओर से एक विशाल आयोजन में प्रो. नारायणदास ने जादू के तथा श्रीकृष्ण मूर्ति ने शारीरिक कलाओं के बड़े प्रभावी कार्यक्रम दिये। वहां नारायणदास के जादू के करिश्मों ने ऐसा जादू छोड़ा कि मैसूर के जज महोदय की पत्नी ने अपनी अंगुली में पहनी पन्ना जड़ी स्वर्ण अंगूठी ही उन्हें भेंट कर दी।

प्रो. नारायणदास बागोरा ब्राह्मण थे। जादू के क्षेत्र में उन्होंने परम्परागत खेलों के अलावा कई नये खेल आविष्कृत किये। ये खेल बागोरा शैली के खेल के नाम से लोकप्रिय हुए। वे बागोरा नाम से भी जाने गये।

अहमदाबाद के राष्ट्रीय कांग्रेस महाअधिवेशन में महात्मा गांधीजी से प्रभावित होकर बागोराजी ने अपने मूल्यवान रेशमी वस्त्र पेंट, कोट, कमीज, टाई का परित्याग कर खादी धारण कर ली जो जीवन पर्यन्त बनी रही। देश-विदेश के अन्य जादूगरों में नत्थू मन्छा, प्रो. वेंकानी, प्रो. नाग, डॉ. अलवारा, प्रो. मरली, मोहम्मद छेल, महेन्द्र हुसैन के सान्निध्य सम्पर्क का भी उन्हें खूब लाभ मिला।

प्रो. नारायणदास बड़े निर्भीक और स्पष्टवादी थे। मेवाड़ प्रजामण्डल के प्रथम डिक्टेटर के रूप में सत्याग्रह के लिए सपरिवार गिरफ्तारी देने में बागोरा सबसे आगे रहे। उनके साथ उनकी सास, पत्नी, पुत्र, पुत्री सब बन्दी बनाए गए। सबके पास तो तिरंगा था ही, उनकी गाय-भैंसों तक के सींगों पर तिरंगा बान्धा गया और तब जो जुलूस निकला उसमें सारी नगरी उलट पड़ी। उनकी बंदी जीवन की यातना-कहानी भी कम हृदयद्रावक नहीं रही।

प्रो. बागोरा का व्यक्तित्व देश-विदेश की कई जानी-मानी हस्तियों का मिलन सेतु रहा। पं. जवाहरलाल नेहरू, सरदार वल्लभ भाई पटेल, पं. मदन मोहन मालवीय, पुरुषोत्तमदास टण्डन, जे. के. कृपलानी, कन्हैयालाल मुंशी, माणिक्यलाल वर्मा जैसी विभूतियां, छोटा गामा, आजम, भोलू, बलदेव गुरु, परीपेकर, चाका, गम्मू, राममूर्ति जैसे पहलवान, सुरैया, ओंकारनाथ ठाकुर, फैयाजखां, अल्ला बंदेखां, कुमार गंधर्व जैसे संगीतज्ञ, स्वामी श्रद्धानन्द, करपात्रीजी, तुकड़ोजी, जैन सन्त जवाहरलालजी, आचार्य तुलसी जैसे सन्त और नामीधामी साहित्यकारों के संसर्ग ने नारायणदास को बहुआयामी प्रतिभा का पंडित ही बना दिया। मेवाड़ी, ब्रज एवं हिन्दी में विपुल साहित्य सृजन कर सामाजिक कुरीतियों के खिलाफ बागोराजी ने जबर्दस्त लोहा लिया और लोकधुनों पर आधारित ख्यालों एवं नाट्य-गीतिकाओं के माध्यम से सशक्त रंगमंच का विकास किया।

बच्चों में नारायणदास 'बाबासाहब' के नाम से बड़े लोकप्रिय थे। हर समय वे बच्चों से घिरे रहते। नाथद्वारा में आने वाले अन्य प्रान्तों के बच्चे भी श्रीनाथजी के दर्शनोपरान्त बाबासाहब नारायणदासजी से अवश्य मिलते। यह मिलन प्रसंग जादू के प्रभाव से बच्चों को पैसा, बिस्कुट, गोलियां आदि देने का रहता। छोटे-छोटे हंसते-मुस्कराते बच्चे उन्हें कंकरियां ला-लाकर देते जिनसे बाबासाहब तत्काल उनके सामने जादुई करिश्मा कर बदले में उन्हें पैसा, बिस्कुट, खांडचने, गोलियां, खांड सिंघाड़े और बर्फी, पेटे देते।

लगभग अस्सी वर्ष की उम्र में नारायणदासजी ने अपना शरीर छोड़ा। उनके अनन्य दोस्त एकात्म रूप रघुनाथ पालीवाल ने मुझे बताया कि नाथद्वारा में रह रहा कोई व्यक्ति ऐसा शायद ही हो जिसने जादूगर बागोराजी को कंकरी देकर उनसे प्रसाद नहीं पाया हो। नाथद्वारा की चप्पा-चप्पा भूमि नारायणदासजी की कलाबाजी की अकथ कहानी की गवाह है।

अपने जादुई करिश्मों से नारायणदासजी ने मुझे भी बड़ा चकित किया और एक के बाद एक करके कभी बिस्कुटों की, कभी पैसों की तो कभी जलेबी, गुलाब जामुन की धड़ाधड़ बरसात कर इन्हें भरपेट खाने का आग्रह किया। ऐसे अत्यन्त नजदीक से मैंने जादुई खेल अपने समक्ष, अपने लिए पहले और बाद में भी कभी नहीं देखे।

- म. भा.

90 वर्षीय बी. एल. कोठारी का निधन

हिन्दी-राजस्थानी के प्रख्यात लेखक डॉ. देव कोठारी के अग्रज बी. एल. कोठारी (90) का पिछले दिनों निधन हो गया। वे स्थानीय आर. एम. वी. में भूगोल अध्यापक रहे और उपाचार्य पद से सेवानिवृत्त हुए। कोठारीजी की प्रारम्भिक शिक्षा जन्म स्थान गोगुन्दा में हुई। उदयपुर में एम. ए. करने के पश्चात जिला कोषागार में अपनी नौकरी शुरू करते जवाहर जैन शिक्षण संस्था, सुमति शिक्षा सदन राणावास में सेवाएं दीं। शिक्षा के साथ-साथ समाज, धर्म तथा चिकित्सा सेवा के क्षेत्र में भी उनकी विशेष रूचि रही। शब्द रंजन परिवार की श्रद्धांजलि।

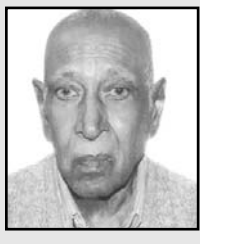

स्मृतियों के शिखर (90) : डॉ. महेन्द्र भानावत

सरलमना सहज चित्त के आराधक थे डॉ. मनोहर शर्मा

डॉ. मनोहर शर्मा की याद आते ही एक सुधर्मी लेखक, अति साधारण और सहज मानव तथा कहीं से लेखक नहीं होने का आत्मीय भाव रखने वाले व्यक्ति के जीवन्त होने की छवि कौंध आती है। जैसा उनका पारदर्शी मन और पारदर्शी स्वभाव रहा वैसा ही उनका लेखन सरलता, माधुर्य, चित्रात्मकता, मोहकता और संजीदगी लिये रहा। वे हिन्दी, संस्कृत और राजस्थानी तीनों में लिखते थे। वे भरपूर जानकारी के विद्वान, सबके चाहक और गुणग्राहक रहे। दूसरों की लिखाई का वे आदर करते थे। उसे प्रोत्साहन तथा प्रतिष्ठा देते और इसे वे अपना आत्म-सुख मानते थे।

बीकानेर में सन् 1955 से 1958 तक कॉलेज-अध्ययन के दौरान भाई साहब डॉ. नरेन्द्र भानावत ने सर्वश्री अगरचन्दजी नाहटा, शम्भूदयालजी सक्सेना, अक्षयचन्दजी शर्मा, चन्द्रदानजी चारण, विद्याधरजी शास्त्री जैसे दिग्गज मनीषियों से तो मेरी भेंट कराई किन्तु याद नहीं पड़ता कभी डॉ. मनोहरजी शर्मा से मैंने भेंट की।

पहलीबार नाहटाजी ने उदयपुर में उनसे मेरी मुलाकात कराई तब मैं जड़ियों की ओल स्थित भण्डारियों की घाटी के ठेठ ऊपरी छोर पर किराये के मकान में रहता था। याद पड़ता है सन् 1964 के अगस्त माह की किसी तिथि पर दोनों राजस्थान साहित्य अकादमी की एक बैठक में आये हुए थे।

मुझे किसी प्रकार की कोई पूर्व सूचना नहीं थी। सुबह कोई 8 बजे नाहटा साहब ने नीचे पोल्, पिरोल् से ही मुझे आवाज दी- 'महेन्द्रजी।' मैं तपाक से अपने कागज-कलम छोड़ बाहर आया, देखा तो नाहटाजी और उनके साथ एक दुबले-पतले महीन सफेद धोती, लम्बी आस्तीन वाला सफेद कमीज और काली टोपी, चश्मा पहने सज्जन को देख मैं क्षण भर के लिए सोच बैठा कि नाहटाजी अपने साथ सम्भवत: अपने मुनीमजी को लाये हैं। मैंने हाथ जोड़ नमन किया। नाहटाजी ने साथ वाले एकलंगी धोतीधारी सज्जन की तरफ इशारा कर बोले- 'इन्हें पहचाना! ये डॉ. मनोहर शर्माजी हैं।'

डॉ. मनोहर शर्मा का नाम सुनते ही मैं हक्का-बक्का रह गया। मेरा तन-मन श्रद्धा भाव से झुक गया। उन्होंने मुझे प्यार भरे अपने अंक में ले लिया और कहने लगे- 'महेन्द्रजी! आपको देखकर मुझे बड़ा विस्मय हुआ। मुझे कभी यह कल्पना नहीं थी कि आप इतने छोटे से और दुबले-पतले होंगे। मैं तो आपको बड़ी उम्र का कोई अच्छे डीलडौल वाला समझ बैठा था। खूब लिखा है आपने इतनी छोटी उम्र में। हमें तो आज बड़ा आनन्द आ गया।'

मैं उन्हें अपने ऊपर वाले कमरे में ले गया। वे कुछ देर खड़े रहकर उस कमरे को चारों ओर से निहारते रहे फिर बैठकर मुदिम मन से बोले- 'आपका कमरा भी उतना ही छोटा है जितने आप, साहित्य से भरपूर कहीं कोई खांचा तक खाली नहीं छोड़ा है।'

मैंने अपनी समझ को ठीक किया किन्तु सोचा कि शर्माजी साहित्य के मुनीम तो हैं ही और नाहटाजी थरपित सेठ। जब सेठ और मुनीम दोनों सहृदयी हों, तब ग्राहक कितना फूला मन हो जाता है और ऐसे में अचानक जब दोनों अपने श्रद्धावान ग्राहक के घर जा पहुंचते हैं तो उस ग्राहक के भाग्य उसी तरह खुल पड़ते हैं जैसे कोई नदी किसी पहाड़ से सर्राती हुई नीचे आकर किसी विस्तृत मैदान में अलल-खलल बन जाती है।

लेखकों को मैंने कई अन्दाजों, कई मुखौटों, अदाओं और रंगों में अंगीरस होते देखा है। निश्चय ही वे सामान्य से कुछ भिन्न लगने वाले होते हैं। अनेकों बार अपने लहजे और बातचीत के ढंग में भी मैंने उन्हें बनावटीपन बिखरते देखा है। उनका संसार भी बड़ा विचित्र होता है। सामान्य व्यक्ति जैसा जीवन जीते हैं, जैसे रहते हैं, बोलते-बतियाते हैं, वे उन सबसे भिन्न मुद्रा लिये लगते हैं परन्तु मैंने डॉ. मनोहर शर्माजी में ऐसे कहीं कोई विलक्षण लक्षण नहीं पाये। बाद में भी जब-जब किसी समारोह या फिर उनके बीकानेर स्थित आवास पर उनसे मेरा मिलना हुआ, मुझे वे सदैव ही अपनी बड़ेरी अंखियां लिये मिले।

ऐसे लेखक कम ही देखने को मिलेंगे जो अपनी बात नहीं बघार कर दूसरों की बात रूचिपूर्वक सुनते हैं, समझते हैं, प्रशंसा करते हैं और उसकी प्रतिष्ठा मण्डित करते हैं। डॉ. शर्मा मुझे ऐसे ही साहित्यसेवी लगे जो सदैव दूसरों को जानने की जिज्ञासा लिये रहते हैं। उन्होंने कभी दूसरों को अन्धेरा देकर सूरज की किरणें नहीं पकड़ीं। किसी राह चलते के पांव में अपने पांव की आंटी देकर कभी किसी को नहीं पछाड़ा। कभी किसी के हक को नहीं दागा और न कभी किसी के लिए अपने हाथों की अंगुलियां ही कड़ीकाई। वे सबके बने रहकर अपने बने रहे।

शर्माजी से मैंने कई रूपों में प्रेरणा पाई है। उनका चुपचाप निरन्तर लेखन कइयों के लिए प्रेरक रहा। वे न अरी में, न बरी में, न उधो-माधो के चक्कर में पड़े। अपनी शुद्धता और साफगोई के कारण वे सभी में समान रूप में स्मरणीय रहे।

भाई साहब का डॉ. शर्माजी से बड़ा घनिष्ट और लम्बा परिचय रहा। उनकी दृष्टि में - 'डॉ. मनोहर शर्मा उन साहित्य-मनीषियों में से थे जिन्होंने मां मरुधरा को अपनी साहित्य साधना से सरस और समृद्ध बनाया। वे लोकभूमि और लोकधर्म की गन्ध व जीवन्तता से जुड़े हुए साहित्यकार थे।

लोकसाहित्य के संग्रह, सम्पादन, विश्लेषण और मूल्यांकन के क्षेत्र में उनकी सेवाएं बहुमुखी और प्रेरणादायी रहीं। उन्होंने लोकसाहित्य के सभी पक्षों- लोकगीत, लोकनाट्य, लोकगाथा, लोककथा और लोकोक्ति पर गहरी अनुभूति के साथ लिखा। लोकजीवन के कई अज्ञात और अनछुए क्षेत्रों को उन्होंने अपने अथक परिश्रम और पूरजोर सामर्थ्य से ज्योतिस्नात किया।

डॉ. शर्मा मात्र लोकसाहित्य के उद्धारक और व्याख्याता ही नहीं थे, वे सृजनधर्मी रचनाकार भी थे। साहित्य के क्षेत्र में भी कविता, कहानी, एकांकी, निबन्ध, समीक्षा, व्यंग्य, गद्य-गीत आदि सभी विधाओं में उन्होंने सफलतापूर्वक सृजन कर राजस्थानी साहित्य को समृद्ध किया। उनकी चारित्रिक सृष्टि में एक ओर राजस्थान के मध्ययुगीन रणबांकुरे और आदर्श युगलप्रेमी विचरण करते रहे तो दूसरी ओर वर्तमान परिवेश के उच्च, मध्यवर्ग के सजीव पात्रों के हेलमेल आदर्शोन्मुखी यथार्थ के सतरंगी पड़ाव नापते रहे। उनकी रचना-प्रक्रिया में लोकधर्मिता की गहराई के साथ शिल्प-विधान भी लोकसाहित्य का लालित्य लिये लकदक रहा। यह कहना कठिन है कि जीवन की सरलता और सादगी ने उनके साहित्य को प्रभावित किया या साहित्य की सरलता और सादगी ने उनके जीवन को संवारा।'

भारतीय लोककला मण्डल में रहते राजस्थान की लीला-परम्परा पर जब मैंने डॉ. मनोहर शर्माजी से पूछताछ की तो उन्होंने अपने बिसाऊ की रामलीला के सम्बन्ध में बताया कि वहां की रामलीला सभी रामलीलाओं से भिन्न अपना प्रभाव लिये है। फलस्वरूप 14 अक्टूबर 1969 को मैं बिसाऊ जा पहुंचा। वहां रामलीला कमेटी के सचिव गोविन्दजी ने मुझे बड़ा सहयोग दिया। उन्होंने रामलीला के पात्रों से भी मिलवाया और बताया कि सौ वर्ष पूर्व गूगामेड़ी पर जमना श्यामण ने छोटे-छोटे बच्चों के माध्यम से खेल-खेल में रामलीला का सूत्रपात किया और बिसाऊ ठाकुर बिसनसिंहजी ने अपने गढ़ के पास इस लीला का सर्वप्रथम विधिपूर्वक मंचन कराया।

इस लीला की यह विशेषता रही कि प्रारम्भ से अन्त तक यह मूक अभिनय लिये है। राम आदि चारों भाई तथा सीता को छोड़ सभी पात्र अपने चेहरे पर मुखौटा धारण करते हैं। प्रतिवर्ष इनके लिए नई पोशाक तैयार की जाती है। मुखौटा अर्थात् चेहरा बनाने का काम चेजारे करते हैं। पोशाक में हनुमानजी की लाल, सुग्रीव की हरी, अंगद की पीली, दधिमुख की सफेद, जामवन्त की कत्थई रंग लिये होती है। राजस्थान की अन्य लीलाओं के साथ इस लीला का उल्लेख मैंने 'मेवाड़ के रासधारी' नामक पुस्तक में किया है जिसका प्रकाशन भारतीय लोककला मण्डल, उदयपुर से जनवरी 1970 में हुआ।

डॉ. शर्माजी ने बिसाऊ में राजस्थान साहित्य समिति नामक संस्था की स्थापना की। यहीं से 'वरदा' नामक त्रैमासिक पत्रिका प्रारम्भ की। इसके माध्यम से उन्होंने कई लेखकों को लिखने की प्रेरणा दी। अनेकों को शोध-संदर्भों से समृद्ध किया। वरदा में समय-समय पर जो सामग्री प्रकाशित हुई वही अपनेआप में राजस्थानी के विपुल और अलभ्य साहित्य का खजाना है।

यह वह समय था जब राजस्थान में अन्य और भी संस्थाएं प्राचीन राजस्थानी साहित्य, लोकसाहित्य, हस्तलिखित ग्रन्थ, पट्टे-परवाने, ताम्रपत्र और शिलालेख पर अंकित अकल्पनीय और अमूल्य अनमोल धरोहर के संग्रह, संरक्षण, सम्पादन तथा प्रकाशन में अग्रणी बनी हुई थीं।

उदयपुर में पं. जनार्दनराय नागर का साहित्य संस्थान और वहां से प्रकाशित शोधपत्रिका, देवीलाल सामर का भारतीय लोककला मण्डल और वहां से प्रकाशित लोककला तथा रंगायन, प्रताप शोध प्रतिष्ठान द्वारा प्रकाशित मज्जमिका, कृष्णचन्द शास्त्री द्वारा सम्पादित अन्वेषणा; बोरूंदा में कोमल कोठारी तथा विजयदान देथा के रूपायन संस्थान तथा वहां से प्रकाशित वाणी-लोकसंस्कृति पत्रिका; जोधपुर से डॉ. नारायणसिंह भाटी के राजस्थानी शोध संस्थान से प्रकाशित परम्परा, डॉ. रामप्रसाद दाधीच के लोकसाहित्य केन्द्र की लोकसाहित्य पत्रिका, राजस्थान संगीत नाटक अकादमी द्वारा प्रकाशित रंगयोग तथा पदम मेहता द्वारा प्रकाशित माणक; डूंगरपुर में गिरीश शर्मा की वागड़ प्रदेश साहित्य परिषद की वाग्वर; पिलानी से डॉ. कन्हैयालाल सहल द्वारा प्रकाशित मरुभारती; बीकानेर से अक्षयचन्द शर्मा के भारतीय विद्यामन्दिर की वैचारिकी, अगरचन्द नाहटा के सादुल राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट की राजस्थान भारती, नागरी भण्डार से विद्याधर शास्त्री की विश्वंभरा, डॉ. किरण नाहटा द्वारा सम्पादित राजस्थानी गंगा जैसी मानक संस्थाओं, विद्वान मनीषियों तथा पूंजीभूत पत्र-पत्रिकाओं का वह काल उसके बाद लौटकर नहीं आया।

यह सर्वथा रेखांकित उल्लेखनीय पक्ष है कि डॉ. मनोहर शर्मा की साहित्यिक जोत को उसी समर्पित निष्ठा, समर्पण और साधुमन से डॉ. उदयवीर शर्मा बिसाऊ में राजस्थान साहित्य समिति और वरदा को वरदायिनी बनाये हुए हैं।

शब्द रंजन

उदयपुर, बुधवार 01 जनवरी 2020

सम्पादकीय

लोकसंस्कृति का संरक्षण

लोकसंस्कृति के संरक्षण के सम्बन्ध में जब भी जिससे बातचीत होती है, यही सुनने को मिलता है कि अब वह बात नहीं रही। इस क्षेत्र में विसंगतियां अधिक देखने को मिलती हैं। अब सब ओर माहौल बदल रहा है। वे गांव, वे लोग, वे परम्पराएं, वह समय नहीं रहा तो लोकसंस्कृति के सरोकार भी वे नहीं रहे। ऐसी स्थिति में हमें ही अपना दृष्टिकोण बदलना पड़ेगा।

पहले सारे संस्कार, कारोबार, हस्त उद्योग अलग-अलग जातियों में बंटे हुए थे और उसी के अनुसार वह जाति जानी-पहचानी जाती थी। सुनार, लुहार, कुम्हार, किसान, सिकलीगर, नाई, धोबी, दर्जी, लखारा, भरावा, पिंजारा, बनिया, ब्राह्मण, ढोली, मिरासी, लंगे, मांगणियार, मोची, खाती, तेली सबके अपने बन्धेबन्धाये हुनर थे। एक परम्परागत सुव्यवस्थित एवं अनुशासित समाजजन अपने-अपने संस्कारों, शिल्पों तथा कार्य धर्मों के अनुसार जीवन व्यतीत करते हुए एक-दूसरे की आवश्यकता की पूर्ति करते संप, सौहार्द, भाईचारा तथा प्रेमाचार का माहौल बनाये रखते थे।

अब वह समय नहीं रहा। ऐसा बदलाव आ गया कि पुराना समय अकल्पनीय सा लगने लगा! ऐसी स्थिति में हमारी यह धारणा कहां तक उचित संगत लिये है कि वे सारी परम्पराएं खासतौर से, लोकसांस्कृतिक परम्पराएं यथावत रहतीं। विकास जब करवट बदलता है तो समग्र रूप से परिवर्तन ग्रहण करता है। प्रकृति का परिवेश ही अब वह नहीं रहा। सब कुछ बदल रहा है और वह बदला हुआ स्वरूप हम अपनी आंखों से निहार रहे हैं।

यही कारण है कि समाज की संरचना जब वह नहीं रही तो मनोरंजन के पक्ष, उपक्रम और सोपान भी बदले हुए परिवेश में, यदि बदलाव ग्रहण करने की सामर्थ्य उनमें रही तो वे अपनी पहचान देते लग रहे हैं अन्यथा उनका समग्र परिवर्तन हो गया है।

सीधी सी बात है, हमारी जीवनधर्मिता और प्रकृति सम्पदा से जुड़े तत्व भी परिवर्तित होते अपना उत्स औचित्य बनाये हुए हैं तो उसी से परिनिष्ठित हमारा जीवन कैसे वैसा रह सकता है?

रही बात सांस्कृतिक सरोकारों के रखवालों की तो वे बदल गये, इसलिए अपना अस्तित्व बनाये हुए हैं। जो आस्था और विश्वास से बन्धे रहे उनकी स्थिति का अध्ययन करने पर पता चलेगा कि उनके पास जो समृद्ध धरोहर और विरासत थी, वह अपनी पहचान ही खो बैठी है। उस धरोहर और विरासत के पहचानहार और पालनहार अब कहां हैं? कहां हैं वे त्यौहार, उत्सव, मेले, ठेले तथा आचरण-अनुष्ठान से जुड़े प्रसंग?

पहले का सारा परिवेश आंचलिकता का प्राधान्य लिये था। सबकी अपनी सीमा थी। उसी में सारा जीवन, यहां तक कि पीढ़ियां तक पलती पोषित थी। कोई बाहरी प्रभाव नहीं था। अब वह अंचल ही नदारद हो गया। लगता है, सारा आकाश, सारा भूमण्डल एक हो गया है। अंचल ने अन्तर्राष्ट्रीयता ग्रहण कर ली है।

यह सर्वथा नयापन, नई हवा, नई रोशनी, नया अन्न-जल सब ओर सबको प्रभावना में ले रहा है तब केवल लोकसंस्कृति के संरक्षण की बात करना भी न्याय संगत नहीं लगता। कहने वाले तो यहां तक कहते हैं कि बातें करने में किसका क्या लगता है? वे लोग स्वयं नहीं बदल रहे हैं क्या? वे कौनसी परम्परा का पोषण किये हैं?

जब वे बदलने, निरन्तर बदलने के लिए प्रयत्नशील बने हुए हैं तो जिनके पास अपनी पारम्परिक संस्कृति का जैसा भी दरसाव सुरक्षित है उन्हें यह नसीहत कैसे दे रहे हैं कि वे नहीं बदलें। क्या हम उन्हें किसी संग्रहालय-सा जीवन जीने के लिए मजबूर नहीं कर रहे? और ऐसी स्थिति में संग्रहालय पीस बनने पर हम उनसे क्या कुछ ग्रहण कर सकेंगे?

आवश्यता है, हम सबमें अपनी संस्कृति के प्रति ऐसा लगाव हो कि हम हर अच्छे अवसर पर उनकी प्रस्तुतियों को तरजीह दें और एक संकल्प स्थिति धारण कर लें। इन सांस्कृतिक सरोकारों से हमें शुभ शकुन मिलता है। मंगल-मांगल्य की वृद्धि होती है। देवी-देवता प्रसन्न होते हैं। सब ओर खुशहाली फैलती है। गहराई से अध्ययन करने पर यह निष्कर्ष तो निकलता ही है ये सब गाने, बजाने, नाचने जनित संस्कार ही हमारे लिए अनिवार्य हिस्से रहे हैं।

देखते-देखते लो, अब पुराना वर्ष अस्त होकर नया वर्ष आ गया है। हर आने वाला वर्ष इसी तरह जाता है और नया वर्ष दस्तक देता है। यही परम्परा की आधुनिकता है। इस अवसर पर हम शब्द रंजन के सभी प्रबुद्ध पाठकों, सुविचारित लेखकों तथा इसे सम्बल दे निरन्तर पोषण देते विज्ञापनदाताओं का आभार मान उनके खुशहाल जीवन की शुभकामना लिये हैं।

राजस्थानी ग्रन्थागार के राजेन्द्र सिंघवी का महाप्रयाण

दिसम्बर के जाते-जाते प्रसिद्ध प्रकाशन संस्था राजस्थानी ग्रन्थागार, जोधपुर के व्यवस्थापक श्री

राजेन्द्रजी सिंघवी का असामयिक निधन हम सबके लिए अत्यन्त दुखद एवं अपूरणीय क्षति है। डॉ. महेन्द्र भानावत ने बताया कि उन्होंने अनेक अनुपलब्ध अलभ्य ग्रन्थों का पुनर्प्रकाशन तो किया ही, अनेक स्थापित एवं नव लेखकों की कृतियां प्रकाशित कर जो साहित्य सहज रूप में उपलब्ध कराया उसके लिए वे सदैव याद किये जाते रहेंगे। विद्वानों तथा शोधकर्मियों के लिए उनके मन में बड़ा आदर था और वे हर समय उनके सहयोग के लिए तत्पर रहते थे। मेवाड़ से उनका विशेष लगाव था। वे जिधर भी जाते सम्पर्क करते। किस क्षेत्र में कौन लेखक क्या कुछ लिख रहा है इसकी उन्हें अप्टूडेट जानकारी रहती। उदयपुर में जब भी उनका आना हुआ वे शब्द रंजन कार्यालय अवश्य आये। हाल ही में उन्होंने डॉ. भानावत की लिखी 'जनजातियों में गाथा गायकी' तथा 'लोकदेवता कल्लाजी राठौड़' नामक पुस्तकें भी प्रकाशित कीं।

डॉ. देव कोठारी ने बताया कि सिंघवीजी साहित्यकारों के साथ हर सम्भव सहयोग के लिए बड़े दिलदार थे। मैंने जब भी उनसे कोई ग्रन्थ मंगवाया उन्होंने तत्काल अपने उदारमन से मेरा सहयोग किया। वे यद्यपि लेखक नहीं थे किन्तु साहित्य की उन्हें हर तरह की विपुल जानकारी और खोजक दृष्टि लिए थे। कई बार वे उन विषयों पर लेखन के लिए प्रेरित करते जिन पर नहीं के बराबर बहुत कम लिखा गया और वे उसके स्त्रोत्र भी बताते। उन्होंने अनेक ऐसी सामग्री को भी प्रकाशित की जो लेखक के मरणोपरान्त बड़ी अस्त-व्यस्त तथा दुर्दिन की शिकार हो अन्धेरे की आंधी बनी हुई थी।

दु:ख की इस विकट घड़ी में सिंघवीजी के शोक संतप्त परिवार के प्रति गहरी हार्दिक संवेदनाएं तथा मृतात्मा को शोकांजलि।

शोधार्थियों की डॉ. भानावत से भेंट

जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय, दिल्ली के श्री ललित सिंह अपने साथी सुमनकुमार के साथ 28 दिसम्बर को शब्द रंजन कार्यालय आए और डॉ. महेन्द्र भानावत से भेंट की।

श्री ललित बाल रंगमंच से सम्बद्ध कठपुतली और मुखौटा-कला के प्रयोग पर पीएच. डी. कर रहे हैं। उन्होंने यहां लगभग दो घण्टे की वीडिया रिकॉडिंग की और कठपुतली सम्बन्धी डॉ. भानावत के द्वारा किये गए शोधकार्यों और भारतीय लोककला मण्डल में देवीलाल सामर द्वारा किये गए प्रयोगों पर विस्तृत जानकारी प्राप्त की।

डॉ. भानावत ने कलामण्डल द्वारा आयोजित कठपुतली समारोहों और रूमानिया में आयोजित सन् 1965 के तृतीय अन्तर्राष्ट्रीय कठपुतली समारोह में कलामण्डल द्वारा भारतीय प्रतिनिधि के रूप में भाग लेने और पारम्परिक कठपुतली नाट्य प्रस्तुति द्वारा विश्व का प्रथम पुरस्कार प्राप्त करने तथा विदेशों में कठपुतली कला पर किये गए प्रयोगों की विस्तारपूर्वक जानकारी दी। सामरजी द्वारा लिखित कठपुतली विषयक पुस्तकें भी उनके लिए अति महत्वपूर्ण बताई।

दूसरे दिन दोनों शोधार्थियों ने कलामण्डल में सेवाएं दे चुके कठपुतली कलाकार तोलाराम मेघवाल से भेंट की जो रूमानिया जाने वाले दल के एकमात्र कलाकार हैं।

सुमनकुमार भी हिन्दी में जेएनयू से ही एम. ए. हैं। उन्होंने पूना के फिल्म्स डिवीजन में प्रशिक्षण प्राप्त कर फिल्मों में अपनी भूमिकाएं दीं और अब स्वतंत्र रूप से डोक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण के कार्य में लगे हुए हैं। उन्होंने यहां डोक्यूमेंट्री फिल्म निर्माण के लिए अनुकूल वातावरण की तलाश की और संध्या को शिल्पग्राम में हो रहे कला-मेले का अवलोकन किया।

कानोड़ के 'खोके'

-भरत जारोली-

मिठाइयां तो आपने बहुत खाई होंगी और मिठाइयां खाने के बाद कई बीमारियों को गले लगाया होगा। आज के दौर में मेवाड़ के ग्रामीण क्षेत्रों में गुलाब जामुन, रस मलाई, रसगुल्ला, खोपरापाक तथा और भी दर्जनों मिठाइयां बाजार में उपलब्ध हैं लेकिन कानोड़ के प्रसिद्ध 'खोके' एक ऐसी मिठाई है जो न केवल आठ दशक से शौकीनों की अजीज बनी हुई है वरन् सर्दी की खुराक के रूप में भी घर-घर पहुंची है।

खोके आदिवासियों में 'मरका' के नाम से तो पढ़े-लिखे लागों में 'इमरती' के नाम से विख्यात हैं। 80 वर्ष पूर्व यहां के पोखरना परिवार के लक्ष्मीलाल पोखरना एवं मोड़ीलाल पोखरना ने खोके बनाना प्रारम्भ किया था। 'मोड़ा बा' के देहावसान के बाद उदयलाल एवं इनके बाद मांगीलाल ने खोके बनाने का काम सम्भाला। लक्ष्मण दादा के मरणोपरान्त उनके पोते चेतन प्रकाश आज भी इस परम्परा का बखूबी निर्वाह कर रहे हैं। 80 वर्ष पूर्व वाली खोकों की मिठास आज भी बरकरार है। इसके अलावा वर्तमान में कानोड़ में आधा दर्जन से ज्यादा दुकानों पर खोके बनाए और बेचे जा रहे हैं।

चेतन प्रकाश ने बताया कि एक तिहाई उड़द की दाल एवं एक चौथाई बेसन में पानी मिला कर हथेली से अच्छी तरह मथा जाता है। इस सम्मिश्रण-घोल में हल्की मात्रा में फूड कलर डाला जाता है ताकि खोके में हल्का केसरिया रंग आ जाए। तैयार घोल को कपड़े से बनी चौकोर एवं एक छेद वाली गरनी में भर देशी घी से भरी हल्की आंच पर चढ़ी तवी में गोलाई से 'खोके' का आकार दिया जाता है। करीब 10 से 15 मिनिट तक उसे हल्की आंच पर तले जाने के बाद पहले से तैयार की गई शक्कर की एक तार की चाशनी में खोके डुबोये जाते हैं।

शक्कर से सराबोर हो जाने पर उन्हें निकाल जारे पर रख दिये जाते हैं ताकि अतिरिक्त चाशनी टपक कर अलग हो जाय। 10-15 मिनिट बाद तैयार खोकों को किसी बर्तन में करीने से सजा दिया जाता है।

सर्दी में ये ही खोके उड़द-मोगर के लड्डू का काम करते हैं। दो दशक पूर्व यहां खोके 25-30 रूपये प्रति किलो के भाव से बेचे जाते थे लेकिन देशी घी, शक्कर, बेसन तथा ईंधन के भावों में वृद्धि के कारण वर्तमान में 300 रूपया प्रति किलो की दर से बेचे जा रहे हैं।

होली, दीपावली, रक्षाबन्धन, हरियाली अमावस्या सहित अन्य त्यौहारों पर कानोड़, भीण्डर, डूंगला, राजपुरा, कूण, लसाड़िया, धरियावद, लूणदा, बलीचा, अमरपुरा सहित आसपास के क्षेत्र के दर्जनों गांवों-कस्बों में यहां के खोके बड़े चाव से खाए-खिलाए जाते हैं। दीपोत्सव पर तो ग्राहकों को अपना नम्बर आने का घण्टों इन्तजार करना पड़ता है। कानोड़ उदयपुर से 75 किलोमीटर दूर बड़ीसादड़ी रेलवे लाइन से जुड़ा प्रसिद्ध कस्बा है। यहां आजादी की लड़ाई में 16 स्वतंत्रता सेनानी हुए और यह मेवाड़ की शिक्षा नगरी के रूप में जाना जाता है।

डॉ. हरिराम आचार्य की स्मृति में डॉ. रमाकांत सम्मानित

जयपुर के जवाहर कला केन्द्र में 15 दिसम्बर को प्रख्यात गीतकार डॉ. हरिराम आचार्य की पुण्यतिथि पर 'हरि सुमिरन' समारोह में मूर्तिकार अर्जुन प्रजापति, रंगकर्मी रणवीरसिंह, वरिष्ठ पत्रकार वीर सक्सेना, शायर लोकेश कुमारसिंह 'साहिल' तथा साहित्यकार डॉ. नरेन्द्र शर्मा 'कुसुम' द्वारा आचार्य द्वारा शेक्सपियर के चर्चित नाटक 'ओथेलो' के हिन्दी रूपान्तरण का लोकार्पण किया गया।

समारोह में आचार्य की स्मृति में शुरू किया गया 'शब्द हवि' सम्मान डॉ. रमाकान्त पाण्डे को प्रदान किया गया। सम्मान स्वरूप इक्कीस हजार रूपये नकद भेंट किये गए। पद्मश्री अर्जुन प्रजापति ने मौके पर ही हरिराम आचार्य का क्ले मॉडल बनाकर उनकी स्मृति को साकार जीवन्त कर सबको भावविभोर कर दिया।

- डॉ. भावना आचार्य

भागवत कथा में आध्यात्मिक ज्ञान की राह और दर्शन

उदयपुर। लोकसभा अध्यक्ष ओम बिड़ला ने कहा है कि भागवत कथा हो या अन्य कोई भी आध्यात्मिक ज्ञान, वह व्यक्ति के जीवन को राह और दर्शन देने का काम करता है। वे यहां भागवत कथा ज्ञान महोत्सव में बोल रहे थे। उन्होंने कहा कि आध्यात्मिक हमारी संस्कृति और परंपरा रही है। सभी धर्मों की संस्कृति को हम हमारे इस देश में संविधान के तहत मानते हैं।

कथावाचक मोहनलाल व्यास ने माताओं से आह्वान किया कि जन्मदिन पर मोमबत्ती बुझाने के बजाय दीप प्रज्वलित करने की परम्परा डालें। जितनी उम्र हो उतनी बार हनुमान चालीसा का पाठ करें और करावें। उन्होंने कहा कि बेटा यदि घर का चिराग है तो एक बेटी दो परिवारों का चिराग है। बेटी जब बहू बनती है तो एक पूरे परिवार की धुरी के रूप में बड़ी जिम्मेदारी उसके कंधों पर आती है।

गीतांजली को मिले दो अवार्ड

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल, उदयपुर को दिल्ली में आयोजित सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर एक्सीलेंस की दो श्रेणीयों 'बेस्ट पेशेंट केयर प्रोवाइडर ऑफ़ द इयर' तथा 'हेल्थकेयर एकेडमिक इंस्टिट्यूट ऑफ़ द इयर' से सम्मानित किया गया। यह पुरस्कार वित्त और कारपोरेट राज्यमंत्री अनुरागसिंह ठाकुर, एयरमार्शल पवन कपूर एवं सिक्स सिग्मा हेल्थकेयर सीईओ डॉ. प्रदीप भारद्वाज ने गीतांजली हॉस्पिटल के चिकित्सा अधीक्षक डॉ. नरेन्द्र मोगरा एवं गुणवत्ता तथा मान्यता विभाग से रियंक गांगावत को प्रदान किया। समारोह में चीफ ऑफ डिफेंस जनरल बिपिन रावत मुख्य अतिथि के रूप में उपस्थित थे।

101 ऑपरेशन शिविर का उद्घाटन

उदयपुर। नारायण सेवा संस्थान में 101 ऑपरेशन शिविर का उद्घाटन मुम्बई के प्रसिद्ध समाजसेवी भरतभाई वीराणी एवं परिवार ने किया। उन्होंने कहा कि लक्ष्मी का सदुपयोग करना ही ईश्वर की पूजा करना है। नारायण सेवा संस्थान द्वारा दिव्यांगों एवं दु:खियों के लिए की जा रही अद्भुत सेवा ने उन्हें अभिभूत कर दिया।

संस्थापक एवं चेयरमैन पद्श्री कैलाश 'मानव' ने बताया कि वीराणी परिवार ने रोगियों की कुशलक्षेम पूछ उन्हें फल वितरित किए तथा निराश्रित बालगृह के बच्चों को अपने हाथों से भोजन कराया। इस अवसर पर श्रीमती रीना वीराणी, राकेश शर्मा, भगवानप्रसाद गौड़, ललित लौहार, अनिल आर्चाय उपस्थित रहे। संचालन महिम जैन ने किया।

स्वयं प्रकाश की याद

-सदाशिव श्रोत्रिय-

स्वयं प्रकाश हमारी युवावस्था का दोस्त था। उसके अचानक चले जाने का मुझे बेहद अफ़सोस है। अपनी अंतिम प्रकाशित कृति 'धूप में नंगे पांव' में उसने हमारे भीनमाल में साथ बिताए दिनों का जिक्र किया है। भीनमाल जैसी छोटी जगह में पढ़ने-लिखने वाले लोगों का अभाव ही उसे मेरे इतना निकट ले आया था।

वह मेहनती था और अपने आपको जगाए रखने के लिए दिन-रात चाय पीता और सिगरेट धूंकता रहता था। कभी कभी अपने स्वास्थ्य के प्रति उसके द्वारा की जा रही इस तरह की ज़्यादती का खयाल करके वह यह भी कहता था- 'आइ एम बर्निंग माइ केंडल एट बोथ एंड्स।' स्वयं प्रकाश को गाने में विशेष महारत हासिल थी और वह कई फिल्मी गाने हमें अपनी दिलकश आवाज़ में सुनाया करता था।

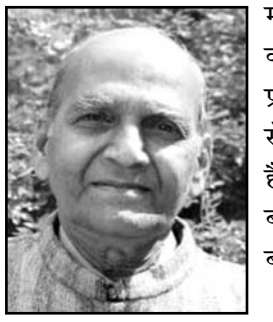

युवावस्था में उसका व्यक्तित्व भी किसी फिल्मी हीरो जैसा था। हमें उसकी अदाएं राजेश खन्ना से मिलती-जुलती लगती थीं पर वह शायद अपने आपको धर्मेन्द्र के ज़्यादा क़रीब मानता था। यदि उस समय आज के सा रे गा मा जैसे टीवी कार्यक्रम होते तो निश्चय ही हम उसे भी कभी उसके हीरो के रूप में देख सकते थे। रेशमा और शेरा फिल्म का गाना 'रात भी है कुछ भीगी भीगी, चांद भी है कुछ मद्धम मद्धम' मुझे उसकी आवाज़ में इसकी मूल रिकॉर्डिंग से भी अधिक आकर्षक लगता था।

उसके द्वारा गाई गई दुष्यंत कुमार की गज़ल की निम्नलिखित पंक्तियां आज भी मेरे कानों में गूंजती हैं-

मेरे गीत तुम्हारे पास सहारा पाने आएँगे।
मेरे बाद तुम्हें ये मेरी याद दिलाने आएँगे।।

स्वयं प्रकाश को लोगों का मनोरंजन करने में मज़ा आता था। मनोरंजक ढंग से कहानी कहने के कौशल को स्वयं प्रकाश ने अपनी मेहनत और साधना से अर्जित किया था। ऐसा मुझे लगता है । कोई कहानीकार मोपांसा या मंटो बग़ैर किसी लम्बी साधना के नहीं बन जाता।

स्वयं प्रकाश का कहानीकार कई जगह पाठक को बरबस हंसने पर मजबूर कर देता है। उसकी लिखी 'गौरी का गुस्सा' मुझे बार-बार याद आती है। उसकी 'नाचने वाली कहानी' भी उसके मनोरंजन के खोजी लेखक से हमारा परिचय करवाती है। सचमुच में वह अपने दोस्तों के बीच एक ऐसा जानदार मित्र था जो अपने श्रोताओं को अपनी बातों से बान्धे रखने का अद्भुत गुण रखता था।

सहानुभूति का समाचार

-दिनेश सहगल -

देर रात दूकान से अपने बंगले जाते हुए उसने फुटपाथ पर सोये लोगों को सर्दी से ठिठुरते देखा तो उसके मन में उनके प्रति सहानुभूति जागी।

दूसरे दिन सेठजी ने मुनीम से कहा- ''कल रात दूकान से आते हुए मैंने फुटपाथ पर सोये हुए बेघर लोगों और भिखारियों को पौष माह की ठिठुरती सर्दी में बुरी तरह ठिठुरते हुए देखा तो बहुत दुख हुआ। मुझे लगा कि इनके लिए कुछ करना चाहिए। इसलिए आप ऐसा कीजिए 40-50 कंबल खरीद कर रख लीजिए। कल इन्हें फुटपाथ पर जाकर बंटवा देते हैं।

मुनीमजी ने बाजार जाकर कंबल खरीद लिए। रात को दूकान आते हुए मुनीम ने कार में बैठे सेठजी से कहा- ''मैंने आपके कहे अनुसार कंबल खरीद लिए हैं पर इन्हें बंटवाने के लिए हमें कल सवेरे जल्दी चलना पड़ेगा, क्योंकि फुटपाथ पर सोये ये सभी लोग तो सुबह जल्दी ही अपनी रोटी कमाई के लिए निकल पड़ते हैं।''

मुनीम की बात सुनकर सेठजी ने कहा- ''मुनीमजी, सवेरे इतनी जल्दी नहीं जा सकते, क्योंकि मीडिया और फोटोग्राफर को भी तो सूचित करना होगा। वे सुबह इतनी जल्दी नहीं पहुंच पायेंगे। फिर भला कंबल वितरण का फायदा ही क्या। अखबार में कंबल वितरण का समाचार व फोटो भी तो छपना चाहिए।''

सुविवि द्वारा 198 विद्यार्थी डिग्रीदार हुए

उदयपुर। मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में राज्यपाल कलराज मिश्र ने कुल 131 को डिग्री के साथ, 67 को स्वर्ण पदक तथा 7 मेधावी विद्यार्थियों को चांसलर मेडल प्रदान किये।

राज्यपाल मिश्र से पीएच. डी. की डिग्री प्राप्त करते विकास बोकड़िया

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में राज्यपाल कलराज मिश्र ने कहा कि आज यह जरूरी है कि हम आजीविका कौशल के साथ-साथ विचार और व्यवहार में सार्वभौम मानवीय मूल्यों की स्थापना करें। शैक्षणिक संस्थान शिक्षा के साथ-साथ विद्या और ज्ञान के प्रकाश को फैलाने वाले केंद्र बनें।

इसके लिए शिक्षक एवं शिक्षार्थी दोनों को अनुशासित रहना होगा। राज्यपाल ने मानविकी और सामाजिक ज्ञान के साथ-साथ वाणिज्य, विधि, प्रबंध, विज्ञान और तकनीकी क्षेत्रों में और अधिक शोध पर बल दिया। उन्होंने मूल अधिकारों के साथ मूल कर्तव्यों का ज्ञान कराने के लिए गोष्ठियां और सेमिनार का आयोजन करने पर जोर दिया।

उच्च शिक्षा मंत्री भंवरसिंह भाटी ने कहा कि राज्य सरकार ने उच्च शिक्षा में 1000 शिक्षकों के रिक्त पदों को भरने के लिए स्वीकृति जारी की है। सूचना तकनीक के द्वारा गांव ढाणी का विद्यार्थी भी विश्वविद्यालयों के विद्वानों के ज्ञान का घर बैठे लाभ प्राप्त कर सकता है। मुख्यमंत्री स्किल डेवलपमेंट योजना के तहत हम शिक्षा को रोजगारोन्मुखी बनाना चाहते हैं। इसके तहत प्रदेश के 150 कॉलेजों में 39 स्किल डेवलपमेंट के कोर्स संचालित किए जा रहे हैं।

अंतर विश्वविद्यालय त्वरक केंद्र नई दिल्ली के निदेशक प्रो. अविनाशचंद्र पांडेय ने उच्च गुणवत्ता वाले शोध और विकास के सहयोग से प्रौद्योगिकी विकास और उच्च शिक्षा में नवाचार को जरूरी बताया। कुलपति प्रो. नरेंद्रसिंह राठौड़ ने विश्वविद्यालय द्वारा अर्जित विभिन्न अकादमिक और शोध उपलब्धियों की जानकारी दी। संचालन रजिस्ट्रार हिम्मतसिंह बारहट ने किया।

हिंदुस्तान जिंक द्वारा राजस्थान में फुटबाल महाकुंभ के आयोजन की घोषणा

टूर्नामेंट के पहले संस्करण में 500 से अधिक स्कूलों के 5000 से अधिक बच्चे हिस्सा लेंगे

उदयपुर। हिंदुस्तान जिंक ने राजस्थान फुटबाल संघ के साथ मिलकर जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट के आयोजन की घोषणा की। टूर्नामेंट का मकसद राज्य में फुटबाल की श्रेष्ठ प्रतिभाओं को तलाशना और उन्हें प्रोमोट करना है। जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट का पहला संस्करण छह महीने तक चलेगा। इस टूर्नामेंट में राज्य के 33 जिलों की टीमें हिस्सा लेंगी। इसके लिए 500 से अधिक स्कूलों की टीमें बनेंगी और इससे 15 साल की कम उम्र के 5000 से अधिक लड़के और लड़कियों को अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का मौका मिलेगा।

जिंक के सीईओ सुनील दुग्गल ने कहा कि जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट का आगाज जोनल स्तर पर अगले साल जनवरी के मध्य से होगा। इसके बाद राज्य स्तर तक इसका विस्तार किया जाएगा और

फिर राजस्थान का अंडर-15 लड़के और लड़कियों का चैम्पियन चुनने के लिए मुकाबले होंगे। टूर्नामेंट का आगाज 16 जनवरी 2020 को उदयपुर में होगा। उसके बाद राजसमंद में 22 जनवरी, जोधपुर में 01 फरवरी, बीकानेर में 07 फरवरी, हनुमानगढ़ में 15 फरवरी, कोटा में 10 मई, झुंझनू में 20 मई, जयपुर (जोनल-1) में 30 मई, जयपुर (जोनल-2) में 31 मई, अजमेर में 14 जून, भीलवाड़ा में 21 जून तथा चित्तौड़गढ़ में 30 जून 2020 को मैच होंगे। स्टेट चैम्पियनशिप का फाइनल मैच 15 जुलाई को उदयपुर के जावर स्टेडियम में होगा।

इस टूर्नामेंट को राज्य से अगला मगनसिंह राजवी चुनने का एक प्लेटफॉर्म माना जा रहा है। यही कारण है कि जिंक फुटबाल के स्काउट्स इसके हर एक मैच पर कड़ी नजर रखेंगे और इससे प्रतिभाशाली खिलाड़ी चुनेंगे और उन्हें जावर स्थित जिंक फुटबाल अकादमी में प्रशिक्षण का मौका प्रदान करेंगे।

राजस्थान फुटबाल संघ के सचिव दिलीपसिंह शेखावत ने कहा कि हम देश के सबसे बड़े टूर्नामेंट्स में से एक के आयोजन के लिए हिंदुस्तान जिंक से हाथ मिलाकर खुश हैं। यह टूर्नामेंट राजस्थान के यू-15 लड़के और लड़कियों के लिए अपनी प्रतिभा के प्रदर्शन का एक बेहतरीन प्लेटफॉर्म साबित होगा।

इस अवसर पर आयोजित समारोह में जिंक फुटबाल यूथ टूर्नामेंट के लिए चमचमाती ट्रॉफी का अनावरण किया। समारोह में राजस्थान के महान फुटबाल खिलाड़ी मगनसिंह राजवी, उदयपुर के पुलिस अधीक्षक कैलाशचंद्र बिश्नोई शरीक हुए। इस टूर्नामेंट का आयोजन जिंक फुटबाल के स्ट्रेटजी एंड इम्प्लीमेंटेशन पार्टनर द फुटबाल लिंक द्वारा किया जाएगा।

आईसीआईसीआई प्रू आईप्रोटेक्ट स्मार्ट पेटीएम पर उपलब्ध

उदयपुर। आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस ने अपने प्रोटेक्शन प्रोडक्ट आईसीआईसीआई प्रू आईप्रोटेक्ट स्मार्ट के वितरण के लिए पेटीएम के साथ समझौते पर हस्ताक्षर किए हैं। पेटीएम 40 करोड़ से अधिक यूजर्स के साथ देश का सबसे बड़ा मोबाइल भुगतान समाधान प्रदाता है। जिन उपयोगकर्ताओं ने पहले ही पेटीएम में अपना केवाईसी प्रमाणीकरण पूरा कर लिया है, वे पेपरलेस ऑन-बोर्डिंग अनुभव का लाभ उठा सकते हैं और कुछ ही मिनटों में उत्पाद की इन-ऐप पर्चेज कर सकते हैं।

आईसीआईसीआई प्रूडेंशियल लाइफ इंश्योरेंस के डिप्टी मैनेजिंग डायरेक्टर पुनीत नंदा ने कहा कि यह ऐसे दो संगठनों का हाथ मिलाना है जो टेक्नोलॉजी का लाभ उठाकर ग्राहकों के साथ जुड़ना चाहते हैं। टर्म इंश्योरेंस किसी भी ग्राहक के पोर्टफोलियो में एक महत्वपूर्ण घटक है। यह टाई-अप पेटीएम यूजर्स को जीवन बीमा खरीदने और अपने परिवारों को वित्तीय सुरक्षा प्रदान करने की उनकी जिम्मेदारी को पूरा करने के लिए सुविधाजनक मार्ग प्रदान करता है। पेटीएम के प्रेसिडेंट अमित नय्यर ने कहा कि हम सभी भारतीयों को आसानी से और सुरक्षित तरीके से लेनदेन करने के लिए डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए अथक प्रयास कर रहे हैं।

आकाश एजुकेशनल सर्विसेस लि. का पहला कॉर्पोरेट सेंटर उदयपुर में लॉन्च

उदयपुर। आकाश एजुकेशनल सर्विसेस लि. (एईएसएल) ने उदयपुर में अपने पहले कॉर्पोरेट सेंटर का उद्घाटन किया। हिरणमगरी स्थित यह सेंटर मेडिकल एवं इंजीनियरिंग प्रवेश परीक्षाओं की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों को विविध प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने के लिए फाउंडेशन लेवल का कोर्स प्रदान करेगा।

नए सेंटर का उद्घाटन आकाश एजुकेशनल सर्विसेज लि. के अध्यक्ष और प्रबंध संचालक जे. सी. चौधरी ने किया। इस अवसर पर रीज़नल डायरेक्टर डॉ. एचआर राव एवं कंपनी के अन्य अधिकारी, फैकल्टी तथा शहर के गणमान्य लोग मौजूद थे।

जे.सी. चौधरी ने कहा कि उदयपुर का नया सेंटर डॉक्टर एवं आईआईटियन बनने के इच्छुक स्थानीय विद्यार्थियों के लिए एक वरदान साबित होगा। आज आकाश पूरे भारत में अपने सेंटर्स के नेटवर्क द्वारा पूरे देश में गुणवत्तायुक्त शिक्षा प्रदान करने के लिए मशहूर है। इसकी गुणवत्तायुक्त शैक्षिक सामग्री एवं टीचिंग की विधियों की प्रभावशीलता आकाश के द्वारा दिए गए सलेक्षंस से प्रमाणित हो जाते हैं, जिनकी वजह से आकाश अंडरग्रेजुएट मेडिकल एवं इंजीनियरिंग कोर्सेस की तैयारी करने वाले विद्यार्थियों की पहली पसंद है।

आकाश में प्रवेश लेने के इच्छुक विद्यार्थी डायरेक्ट एडमिशन (डीए) या एडमिशन कम स्कॉलरशिप टेस्ट (एसीएसटी) ले सकते हैं या फिर एएनटीएचई (आकाश नेशनल टेलेंट हंट एग्ज़ाम) के लिए रजिस्टर करा सकते हैं।

आकाश पर प्रस्तुत किए जाने वाले प्रोग्राम विद्यार्थियों को विविध परीक्षाओं के लिए तैयार करते हैं। इसके अलावा यहां अपनाई जाने वाली टीचिंग की विधि सैद्धांतिक एवं अनुप्रयोग आधारित शिक्षा पर केंद्रित है, जिसके कारण यह ब्रांड सबसे विशेष है। आकाश की विशेषज्ञ फैकल्टी टीचिंग की आधुनिक एवं इंटरैक्टिव विधियों का उपयोग करती है, जिससे विद्यार्थियों को अपना उद्देश्य प्राप्त करने में मदद मिलती है।

मैनकाइंड फार्मा व ग्लेनमार्क फार्मास्यूटिकल्स में गठबंधन

उदयपुर। मैनकाइंड फार्मास्यूटिकल्स लि. और ग्लेनमार्क फार्मास्यूटिकल्स लि. ने सब-लाइसेंसिंग अनुबंध पर हस्ताक्षर किए जिसके तहत भारत में सोडियम ग्लूकोज़ को-ट्रान्सपोर्टर-2 (एसजीएलटी2) इन्हिबिटर रेमोग्लिफ्लोज़िन इटाबोनेट की संयुक्त रुप से मार्केटिंग की जाएगी। इस अनुबंध के अनुसार, मैनकाइंड भारत में अपने खुद के ट्रेडमार्क के अंतर्गत दवाई की बिक्री करेगा जबकि ग्लेनमार्क द्वारा मैनकाइंड के लिए इस दवा का उत्पादन और आपूर्ति की जाएगी।

तीसरे चरण के क्लिनिकल ट्रायल्स सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, अप्रैल 2019 में ग्लेनमार्क को ड्रग्स कंट्रोलर जनरल ऑफ इँडिया (डीसीजीआई) की ओर से रेमोग्लिफ्लोज़िन इटाबोनेट के लिए मंजूरी प्राप्त हुई। ट्रायल्स के दौरान रेमोग्लिफ्लोज़िन ने डापाग्लिफ्लोज़िन के साथ बराबरी की तुलना में बेहतर दक्षता और सुरक्षा को प्रदर्शित किया।

एमएचएफसीएल का राजस्थान में विस्तार

उदयपुर / चित्तौड़गढ़। मुथूट हाउसिंग फाइनेंस कंपनी लि. (एमएचएफसीएल) ने रास्थान में अपनी मौजूदगी मजबूत करने की जानकारी दी। कंपनी ने राजस्थान में उदयपुर, सीकर, राजसमंद और चित्तौड़गढ़ में 4 नई शाखाओं का शुभारम्भ किया। मुथूट हाउसिंग फाइनेंस कंपनी लि. के मुख्य कार्यकारी अधिकारी पवन के. गुप्ता ने कहा कि बढ़ती हुई वाणिज्यिक गतिविधि और खरीदारों के उत्साह के कारण राजस्थान में सस्ते आवासन की मांग काफी बढ़ी है। इस राज्य में अपनी मौजूदगी मजबूत करके हम निम्न आय समूहों के लोगों के लिए उनके मालिकाना घर की दिशा में योगदान करना चाहते हैं । टेक्नोलॉजी के सहारे हम ऋण स्वीकृत करने की प्रक्रिया को तेज करेंगे। हमारे प्रस्ताव हमारे ग्रुप के मूलमन्त्र मानवीय आकांक्षा का सशक्तीकरण से अनुरूप हैं और हमारा लक्ष्य आम आदमी के घर के सपना को पूरा करने के लिए उन्हें सस्ते दर पर ऋण उपलब्ध कराना है। एमएचएफसीएल इन नई शाखाओं में बिल्डरों से घर खरीदने, पुराने घर खरीदने, खुद घर बनवाने, बने-बनाए घर का विस्तार करने, घर में सुधार करने और अचल संपत्ति खरीदने के लिए गृह ऋण प्रदान करेगी।

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना लागू

उदयपुर। एचडीएफसी एर्गो जनरल इंश्योरेंस कंपनी को राजस्थान सरकार द्वारा प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना (पीएमएफबीवाय) लागू करने के लिये अधिकृत किया गया है। यह बीमा योजना कर्जदार और गैर-कर्जदार किसानों के लिये रबी सीजन 2019 के लिये उपलब्ध कराई जायेगी।

पीएमएफबीवाई स्कीम सूखा, बाढ़, शुष्क काल, भूस्खलन, चक्रवात, तूफान, कीट एवं बीमारियों और कई अन्य जैसे बाहरी जोखिमों से फसल को होने वाले नुकसान के लिए किसानों का बीमा करती है। उपज में हुए नुकसान का निर्धारण करने के उद्देश्य से, राज्य सरकार इस योजना के लिए अधिसूचित क्षेत्रों में अधिसूचित फसलों पर फसल काटने के प्रयोग (क्रॉप कटिंग एक्सपीरिमेंट्स-सीसीई) के लिए योजना बनाएगी और उसका क्रियान्वयन करेगी। यदि सीसीई के आधार पर उपज डेटा कम हो जाता है, तो किसानों को उनकी उपज में कमी का सामना करना पड़ेगा जिसके लिए किसानों को दावों का भुगतान किया जाएगा।

पार्श्वनाथ का जन्मकल्याणक महोत्सव मनाया

उदयपुर। देशभर के 108 पार्श्वनाथ मंदिरों में शुमार सवीना पार्श्वनाथ मंदिर पर जन्मकल्याणक महोत्सव धूमधाम से मनाया गया। श्री जैन श्वेतांबर

महासभा के तत्वावधान में आयोजित जन्मोत्सव पर श्रावक-श्राविकाओं ने प्रक्षाल, केसर और पुष्प से भगवान की पूजा अर्चना की। भगवान को रजत आंगी धराई गई।

महासभा के मंत्री कुलदीप नाहर ने बताया कि सत्तरभेदी पूजा के बाद मंदिर के शिखर पर वार्षिक ध्वजा चढ़ाई गई। इसके पश्चात भमरासिया गार्डन में स्वामीवात्सल्य आयोजित किया गया जिसमें पांच हजार से अधिक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। शाम को संध्यावेला में कुमारपाल राजा द्वारा भगवान की 108 दीपक से महाआरती एवं मंगल दीपक किया गया।

वाद्य यंत्रों की अनुगूंज से शिल्पग्राम उत्सव सम्पन्न

उदयपुर। पश्चिम क्षेत्र सांस्कृतिक केन्द्र की ओर से

प्रतिवर्ष आयोजित दस दिवसीय शिल्पग्राम उत्सव-2019 का समापन पहले लोकवाद्य यंत्रों की झंकार और बाद में शास्त्रीय वाद्यों के एसेम्बल से हुआ। प्रतिदिन दर्शकों ने देश के विविध क्षेत्रों की कलाओं के वैविध्य से अनूठी प्रदर्शनधर्मी कलाओं की प्रस्तुति का आनन्द लिया।

प्रतिदिन संध्या को देश के विभिन्न भागों के शिल्पियों द्वारा शिल्प की अनेक कलात्मक वस्तुएं खरीदने वालों का हुजूम उमड़ा पड़ता। कलात्मक वस्तुओं में पत्थर के चाय के कप, प्लेट, सर्विंग बाउल, बांस व बेंत के बने फूलदान, डेकोरेटिव फर्नीचर, गर्म व ऊनी वस्त्र, ऊनी टोपियाँ,

आर्टिफिशियल फ्लॉवर्स, बुके आदि को लोगों द्वारा खूब पसंद किया गया। पूर्वोत्तर के परिधान, लकड़ी के फर्नीचर, कलात्मक फोटो फ्रेम, कॉटन बेडशीट, मिट्टी के कलात्मक पॉट्स, आर्टिफिशियल ज्वैलरी, वूलन कारपेट, बनारसी साड़ियां, विभिन्न प्रकार के परिधान, कॉटन साड़ियाँ, जूट के बैग्स, मोजड़ी, कोल्हापुरी चप्पल, फुलकारी काम, कच्छी शॉल, बाड़मेरी पट्टू व जैकट्स आदि की जम कर बिक्री हुई।

समापन पर शाम को मुक्ताकाशी रंगमंच पर कार्यक्रम की शुरूआत ऑडीशा के सिंगारी नृत्य से हुई। पुणे के चारूदत्त फड़के व उनके साथियों ने इन्स्ट्रूमेन्टल एसेम्बल में वादन से शिल्पग्राम की वादियों में दूर-दूर तक संगीत का माधुर्य घोल दिया। राग किडवानी पर आधारित व तीन ताल में निबद्ध दो कम्पोजिशन्स में बांसुरी, तबला, सितार, पखावज आदि का सामंजस्य अति उत्कृष्ट रहा।

'प्लेज फोर सोलर' कैम्पेन लॉन्च

उदयपुर। भारत की सबसे बड़ी सौर ऊर्जा कंपनी और टाटा पावर के पूर्ण स्वामित्व वाली सहायक कंपनी टाटा पावर सोलर ने अपना 'प्लेज फोर सोलर' कैम्पेन लॉन्च किया है। यह कैम्पेन उपभोक्ताओं को आवासीय सोलर रूफटॉप समाधान स्थापित करने और असीमित मात्रा में उपलब्ध प्राकृतिक संसाधन का उपयोग करने के लिये प्रोत्साहित करता है।

कैम्पेन की शुरूआत रमेशकुमार सिंघवी - अध्यक्ष यूसीसीआई, बसंत खमेसरा- पूर्व एमडी जेडीवीवीएनएल, एन.एस. राव अध्यक्ष अनंत हॉस्पिटल एंड मेडिकल कॉलेज, गिरीश जोशी- एस.ई. (ओ एंड एम) एवीवीएनएल (उदयपुर) ने की।

यह कैम्पेन देश के 49 शहरों में सफल रहा है और सौर ऊर्जा को बढ़ावा देने के लिये आने वाले महीनों में 51 अन्य शहरों में जाने की संभावना है, क्योंकि सौर ऊर्जा उपकरण स्थापित करने से प्रतिवर्ष 50,000 प्रति 5 किलोवाट तक की बचत होने की उम्मींद है।

टाटा पावर के प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी प्रवीर सिन्हा ने कहा कि नया कैम्पेन 'प्लेज फोर सोलर' उपभोक्ता को स्वच्छ और हरित समाधान अपनाने के लिये प्रोत्साहित करेगा। हम देशभर में अपने ग्राहकों के लिये सरल और कम लागत वाली बिजली उत्पन्न करने हेतु सोलर रूफटॉप की पेशकश करते हुए प्रसन्न हैं। हम राजस्थान के सभी ग्राहकों से इस सेवा का पूरा लाभ उठाने का आग्रह करते हैं।

आशीष खन्ना, प्रबंध निदेशक एवं मुख्य कार्यकारी अधिकारी, टाटा पावर सोलर और टाटा पावर (रिन्यूएबल्स) के प्रेसिडेन्ट ने कहा कि नये कैम्पेन से हम अपने आवासीय उपभोक्ताओं को सोलर रूफटॉप स्थापित करने के वाणिज्यिक लाभों और गुणवत्ता सम्बंधी पहलुओं की जानकारी देने का प्रयास कर रहे हैं। इस पहल और हमारे कम लागत वाले रूफटॉप समाधानों से उपभोक्ताओं को ऊर्जा संरक्षण में मदद मिलेगी और बिजली की लागत कम होगी। इससे हमें भी भारत की नंबर 1 रूफटॉप कंपनी के तौर पर स्थापित रहने के अपने उद्देश्य में मदद मिलेगी।

टेक्नो स्पार्क पावर, कैमॅन 12 एयर और टेक्नो स्पार्क गो लॉन्च

उदयपुर। ट्रांसियॉन इंडिया के प्रीमियम स्मार्टफोन ब्रांड टेक्नो ने पांच से दस हजार रुपये के बीच की कीमत में किफायती स्मार्टफोन टेक्नो स्पार्क पावर, कैमॅन 12 एयर और टेक्नो स्पार्क गो की नई रेंज लॉन्च कर बाजार में हलचल मचाई है।

टेक्नो स्पार्क पावर 8,499 रुपये में उपलब्ध है और यह 9 हजार रुपये से कम कीमत वाली श्रेणी में एक गेम-चेंजर है। इसका श्रेय इसकी सेगमेंट-प्रथम 6000 एमएएच बैटरी को जाता है। यह मॉन्सटर बैटरी फोन को पांच दिनों तक चलने की अनुमति देती है। टेक्नो कैमॅन 12 एयर में 6.55-इंच का एचडी+ डिस्प्ले, एआइ ट्रिपल रियर कैमरा 16 एमपी + 2 एमपी + 5 एमपी, 4जीबी रैम, 64 जीबी का आंतरिक स्टोरेज और 4000 एमएएच बैटरी है जो कि सिर्फ 9,999 रुपये में उपलब्ध है।

टेक्नो स्पाटर्क गो की कीमत 5499 रुपये है और सेगमेंट-प्रथम 6.1 एचडी+ डॉट नॉच डिस्ले के साथ आने के कारण यह एक गेम चेंजर है। इसमें 5एमपी एआइ सेल्फी में फ्रंट फ्लैश और 8एमपी एआइ रियर कैमरा, ड्युअल फ्लैश लाइट के साथ है। फोन 2जीबी+16जीबी के स्टोरेज में उपलब्ध है और सुरक्षित चार्जिंग के साथ 3000 एमएएच की बैटरी दी गई है। टेक्नो का नया पोर्टफोलियो 35,000 से अधिक ऑफलाइन रिटेल स्टोर्स में उपलब्ध है। टेक्नो के सभी स्मार्टफोन्स '111' के अनूठे वादे के साथ आते हैं।

रामदेव खाद्य उत्पाद पर डबल धमाके की घोषणा

उदयपुर/ चितौड़गढ़। रामदेव खाद्य उत्पाद ने खुदरा विक्रेताओं के लिए डबल धमाका की घोषणा वितरक सम्मेलन में की है जिसके तहत खाद्य उत्पादों के माध्यम से होंडा एक्टिवा जीत सकते हैं। सम्मेलन में गुजरात के 120 से अधिक और राजस्थान के 16 वितरकों ने भाग लिया और और कंपनी के विभिन्न स्नेक्स के बारे में चर्चा की।

अध्यक्ष हसमुख पटेल ने रामदेव खाद्य उत्पाद की प्रेरक यात्रा के बारे में चर्चा करते हुए कहा कि हमारे वितरक रामदेव खाद्य उत्पाद के विकास में महत्वपूर्ण भागीदार रहे हैं और मैं भविष्य में भी उनका समर्थन चाहता हूं। उन्होंने वितरकों के लिए एक नई प्रोत्साहन योजना की भी घोषणा की ।

कंपनी के मार्केटिंग मैनेजर कल्पेश दवे ने बताया कि रामदेव के स्नेक्स सेगमेंट ने मजबूती से बिक्री वृद्धि की रिपोर्ट दर्ज की है। इसका कारण बेहतर प्लेसमेंट और वफादार ग्राहक होना बताया।

रामदेव खाद्य उत्पाद के निदेशक प्रदीप पटेल ने अपने अनुभवों को साझा करते हुए वितरकों को बताया कि वे कैसे डबल धमाका क्यूपीएस योजना के माध्यम से अपनी बिक्री बढ़ा सकते हैं और कैसे पहली बार वितरकों के पास लक्ष्य की उपलब्धि पर होंडा एक्टिवा जीतने का मौका है। कंपनी ने 1 जनवरी 2020 से 31 मार्च 2020 तक खुदरा विक्रेताओं के लिए न्यूनतम 5000 से लेकर 500000 रुपये का अधिकतम लक्ष्य निर्धारित किया है।

उदयपुर में ब्लड स्टोरेज यूनिट का उद्घाटन

उदयपुर। एचडीएफसी बैंक ने उदयपुर, में ब्लड स्टोरेज यूनिट की स्थापना की है। उदयपुर के प्रतिष्ठित सरकारी हॉस्पिटल, महाराणा भूपाल गवर्नमेंट हॉस्पिटल में स्थापित इस यूनिट से किसी भी मरीज को सुरक्षित खून चढ़ाने में आने वाली अनुपलब्धता में कमी आएगी। यह पहल बैंक की सामाजिक विकास

कार्यक्रमों #Parivartan का एक हिस्सा है। एचडीएफसी बैंक की नई ब्लड स्टोरेज इकाई में 1,800 यूनिट तक रक्त संग्रहित किया जा सकेगा। अस्पताल की मौजूदा रक्त भण्डारण क्षमता 1,200 यूनिट्स है। एमबी हॉस्पिटल में अब 3,000 यूनिट रक्त का संग्रह किया जा सकेगा। एक यूनिट रक्त से कम से कम 3 लोगों की जान बचाई जा सकती है। इस अवसर पर अस्पताल परिसर में आयोजित एक समारोह में, ब्लड स्टोरेज इकाई का उद्घाटन आरएनटी मेडिकल कॉलेज के प्रिंसिपल एवं कंट्रोलर, डॉ. लाखन पोसवाल ने किया। उनके साथ एचडीएफसी बैक के एसवीपी, ऑपरेशंस रघुनाथ रेड्डी तथा बैंक के कई वरिष्ठ अधिकारी भी उपस्थित थे। भवेश झवेरी, कार्यकारी निदेशक, एचडीएफसी बैंक ने कहा कि ऐसे में जब देश में रक्त की मांग और आपूर्ति में काफी अंतर है, रक्त किसी भी रोगी के लिए काफी मूल्यवान है।

आदित्य बिड़ला हेल्थ इंश्योरेंस की ब्रांच खुली

उदयपुर। आदित्य बिड़ला हेल्थ इंश्योरेंस कंपनी लि. (एबीएचआईसीएल) ने उदयपुर में अपनी फुल-सर्विस ब्रांच का उद्घाटन कर राजस्थान में अपनी मौजूदगी को और मजबूत किया हैं। नई शाखा के माध्यम से एबीएचआईसीएल और अधिक लोगों तक पहुंचने में सक्षम होगा उन्हें प्रतिकूल स्वास्थ्य स्थितियों के दौरान बढ़ती वित्तीय सुरक्षा जरूरतों के साथ सशक्त करेगा। इसके अतिरिक्त, कंपनी अपने एकीकृत स्वास्थ्य बीमा समाधानों के माध्यम से स्वस्थ जीवन की अवधारणा को बढ़ावा देने पर भी ध्यान केंद्रित करेगी।

आदित्य बिड़ला हेल्थ इंश्योरेंस कंपनी लि. के सीईओ मयंक बथवाल ने कहा कि उदयपुर में पहली फुल-सर्विस ब्रांच के शुभारंभ की घोषणा करते हुए हमें खुशी हो रही है, जिसके तहत हम शहर के निवासियों के लिए कस्टमाइज्ड स्वास्थ्य बीमा समाधान प्रस्तुत करेंगे।

डॉ. अरुण पाण्डेय द्वारा न्यूयॉर्क में प्रशिक्षण

उदयपुर। गीतांजली मेडिकल कॉलेज एवं हॉस्पिटल, उदयपुर के सीनियर ओंको सर्जन डॉ. अरुण पाण्डेय ने लिवर, पित्त एवं पेन्क्रियाज से सम्बंधित कैन्सर की जटिल सर्जरी का नवीनतम तकनीक द्वारा इलाज का एक माह का प्रशिक्षण विश्व मेमोरियल स्लोन कैटरिंग कैंसर सेंटर, न्यूयॉर्क, अमेरिका में प्राप्त किया। इसके लिए उन्हें अंतर्राष्ट्रीय यू. आई. सी. सी फेलोशिप के अंतर्गत चयनित किया गया था। यह प्रशिक्षण वहां के हैपॅटोबिलियरी कैंसर विभाग के एच.ओ.डी. एवं लिवर सर्जन डॉ. विलियम आर. जर्नागिन द्वारा दिया गया।

साई तिरुपति यूनिवर्सिटी, उदयपुर

पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज

MBBS, M.Sc. (Medical Sciences)

वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ नर्सिंग

B.Sc., M.Sc. (नर्सिंग)

वेंकटेश्वर स्कूल ऑफ नर्सिंग

GNM

वेंकटेश्वर कॉलेज ऑफ फिजियोथैरेपी

BPT

वेंकटेश्वर इंस्टीट्यूट ऑफ फार्मेसी

D. Pharmacy

Ph.D. PROGRAMME

▸ Anatomy ▸ Biochemistry ▸ Physiology
▸ Pharmacology ▸ Microbiology ▸ Nursing

For Admission enquiry contact : 9587890081, 9587890082

PIMS **पेसिफिक इंस्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंसेज**

अम्बुआ रोड़, उमरड़ा, उदयपुर (राज.) 313015 | Phone : 0294-3010000, Mob.: 8696440666 | Email: info@pacificmedicalsciences.ac.in Web: www.pacificmedicalsciences.ac.in

स्वत्वाधिकारी प्रकाशक डॉ. तुक्तक भानावत द्वारा 352, कृष्णपुरा, सेंटपॉल स्कूल के पास, उदयपुर - 313001 (राज.) से प्रकाशित एवं मुद्रक लोकेश कुमार आचार्य द्वारा मैसर्स पुकार प्रिंटिंग प्रेस 311-ए, चित्रकूट नगर, भुवाणा, उदयपुर (राज.) से मुद्रित। सम्पादक : रंजना भानावत। फोन : 0294-2429291, मोबाइल - 9414165391, Email : shabdranjanudr@gmail.com, drtuktakbhanawat@gmail.com, सर्व विवादों का न्याय क्षेत्र उदयपुर होगा।